पद्मश्री सुभाषिणी देवी का भारतीय जीवन परिप्रेक्ष्य

डा. रविता रानी

स्कोलर,
इतिहास

प्रस्तावना

पद्मश्री सुभाषिणी देवी (1914–2003) का जन्म ऐसे समय में हुए था जब भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का बोलबाला था। देश की पृष्ठभूमि संकटकाल से गुजर रही थी। भारत में जीवन परिप्रेक्ष्य की सकारात्मकता के सभी रास्ते अवरूद्ध हो गए। सामाजिक पृष्ठभूमि पर लोगों में जीवन परिप्रेक्ष्य एवं रचनात्मक चिन्तन का जोश बहुत कमजोर हो चुका था। अतः समाज जड़ता का शिकार होकर अनेक कुरीतियों से घिरता जा रहा था। देश में बाल–विवाह, सतीप्रथा, कन्या वध, जाति प्रथा, विधवा प्रथा, लिंग भेद एवं बली प्रथा जैसी कुरीतियां गहन रूप से प्रवेश कर चुकी थी। इसी कारण जीवन परिप्रेक्ष्य की चमक समाप्त होने की कगार पर थी।

वस्तुतः 19वीं शताब्दी का काल पुनर्जागरण, धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना जागृति का काल माना जाता है। इन्हीं आन्दोलनों ने जीवन परिप्रेक्ष्य के मार्ग को प्रशस्त किया। ऐसे में 1936 ई. में भक्त फूल सिंह द्वारा स्थापित कन्या गुरूकुल को 1942ई. में उनके बलिदान के पश्चात् पद्मश्री सुभाषिणी द्वारा संचालन के लिए सर्वस्व समर्पण करना एक बड़ा महत्वपूर्ण उत्प्रेरक था। प्रस्तुत शोध पत्र में ''पद्मश्री सुभाषिणी देवी का भारतीय जीवन परिप्रेक्ष्य'' समझने का विनम्र प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्धेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास किया गया है–

1. 20वीं शताब्दी के समय सामाजिक पृष्ठभूमि
2. पद्मश्री सुभाषिणी देवी के भारतीय जीवन परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण

विवरण

अध्ययनकाल में अनेकों धर्मों के कानूनों, आडम्बरों एवं धार्मिक प्रथाओं ने जन मानस के जीवन की स्थिति एवं चिन्तन को निम्न स्तर पर खड़ा कर दिया था।[1] भारतीय समाज सुधारकों में स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, राजाराम मोहनराय, भक्त फूल सिंह एवं बहन सुभाषिणी देवी तक सभी ने शिक्षा प्रणाली के साथ–साथ जीवन परिप्रेक्ष्य पर बल दिया।

पद्मश्री सुभाषिणी का जीवन परिचय

बहन सुभाषिणी का जन्म 14 अगस्त 1914 ई. को हरियाणा के पानीपत में हुआ था। इनके पिता का नाम भक्त फूल सिंह एवं माता का नाम लक्ष्मी दवी था। इनके बचपन का नाम सुभाषिणी रखा गया। 9 वर्ष की आयु में स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से इनको गुरूकुल दरियागंज भेजा गया। 1930 ई. में उन्होनें नौंवी दसवीं के समक्ष 'विद्याधिकारी' की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1931 ई. में पण्डित (वेदों के ज्ञाता) अभिमन्यु बहबलपुर जींद के साथ वैवाहिक प्रणय सूत्र में वैदिक रीति–रिवाजानुसार बांधी गई। दहेज स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदभाष्यभूमिका एवं सफेद धोती (रंगीन पट्टी वाली) दी गई। उन्होनें विवाह के पश्चात 1933 ई. में जे.बी.टी. की परीक्षा रोहतक से उत्तीर्ण की। 1934 ई. में सुभाषिणी को राजकीय विद्यालय जींद से सरकारी सेवा में नियुक्ति मिल गई।

गुरूकुलों के संचालन हेतु सुभाषिणी को 1940–41 में भक्त फूल सिंह द्वारा 7 दिनों के अनशन के पश्चात सरकारी सेवा से त्यागपत्र देने के लिए मना लिया था। 1942 ई. में भक्त फूल सिंह के बलिदान के पश्चात गुरूकुल महासभा के कुछ व्यक्तियों द्वारा बहन सुभाषिणी का आचार्या बनाकर कन्या गुरूकुल में लाया गया। उन्होनें 1942 ई. में पिता भक्त फूल सिंह के बलिदान पर्यन्त उनकी इच्छानुसार कन्या गुरूकुल की बागडोर संभाली। उस समय वे मुख्याध्यापिका के पद पर कार्यरत थी। उन्होनें कन्या गुरूकुल को कच्ची मिट्टी की चार झोपड़ियों से संभाला एवं अति कठोर प्रयासों से संस्थानों का संचालन कर पिताश्री द्वारा प्रदान किए गए दायित्व को पूर्णतः वहन करते हुए कन्या गुरूकुल का संचालन किया।

उन्होनें 1942 ई. में पिता भक्त फूल सिंह के बलिदान पर्यन्त उनकी इच्छानुसार कन्या गुरूकुल की बागडोर संभाली। चार कच्ची मिट्टी की झोंपड़ियों से संभाला गया गुरूकुल उनके प्रयासों से ही वृहद रूप धारण कर सका। उनके व्यक्तिगत गुणों, शैक्षणिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए भारत सरकार के महामहिम राष्ट्रपति श्री फखरूददीन अली अहमद द्वारा 3 अप्रैल 1976 ई. को पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया।

अन्ततः 25 फरवरी 2003 को पद्मश्री बहन सुभाषिणी देवी को सांस में तकलीफ होने लगी। अगले ही दिन उनको अपोलो अस्पताल दिल्ली ले जाया गया। स्वास्थ्य अत्यधिक खराब होने के कारण उनको 8 मार्च 2003 को गहन चिकित्सा कक्ष में रखा गया। 9 मार्च की शाम उन्होनें अपने गुरूकुलों की चिन्ता व्यक्त की। उसी रात 10 मार्च की सुबह 4:30 से 5 बजे तक हृदय गति अवरोध से उनकी आत्मा अनन्त शान्ति में लीन हो गई।[2] पद्मश्री बहन सुभाषिणी देवी अपने समय पर अमिट छाप छोड़ गई। वे अपने समय की आवश्यकता थी। वे नये भारत की नव चेतना थी। उन्होनें जीवन परिप्रेक्ष्य का नवसृजन किया, भूले हुए शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य एवं अध्यात्मवाद को पुनर्जीवित किया एवं सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। वे आधुनिक भारत के लिए प्रेरणा, विश्वास एवं राष्ट्रीय गर्व का स्त्रोत बनकर शिक्षा की प्रबल समर्थक बनीं।

शिक्षा की प्रबल समर्थक

पद्मश्री सुभाषिणी देवी शिक्षा को बहुत अधिक महत्व देती थी। वे शिक्षा से अविद्या का सामाजिक अंधकार भारत भूमि से दूर करना चाहती थी। विद्या समर्थक बनकर उन्होनें गांव–गांव की गलियों में शिक्षा का प्रचार किया एवं नारी शिक्षा को प्रोत्साहित किया। उन्होनें कहा 'नारी शिक्षा के बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता।' वे '**विद्या की पक्षधर रूपी सिद्धान्त**' पर कार्यरत होकर पथ पर अग्रेषित रही।
उन्होनें अनेक विधवाओं, सामान्य दीन–दुःखी नर–नारियों को गुरूकुलों में सेवाएं प्रदान की। ग्रामीण परिवेश में जाकर एवं गुरूकल में रहकर अनेक झगड़ों का निपटारा किया एवं आर्य समाज के सभी नियमों का पालन करते हुए जीवन पर्यन्त सामाजिक सेवा की। उन्होनें वैर, अहंकार, लोभ–लालच एवं व्यभिचार को मनुष्य का शत्रु बताया। समाज कल्याण हेतु वे यथा संभव संलग्न रही।[3] वे जीवन परिप्रेक्ष्य के लिए शिक्षा की कटिबद्धता को अनिवाय समझती थी।

वैचारिक जीवन परिप्रेक्ष्य

- प्रत्येक मनुष्य को 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धान्त को अपनाना चाहिए।
- उनके मतानुसार श्रृंगार से व्यभिचार एवं सरलता से सदाचार का जन्म होता है।
- समाज तब उभरेगा जब लड़कियां शिक्षित होकर अपना सारा जीवन जन सेवा में लगाएंगी।
- लड़कियां अपनी रक्षा स्वयं करें एवं प्रत्येक नर–नारी में निर्भयता, स्वावलम्ब और आत्मविश्वास होना चाहिए।
- विद्या प्रचार का व्रत सबको लेना चाहिए।
- जीवन को गरीब जनता एवं गरीब वर्ग के उत्थान में लगाना चाहिए। यही जीवन श्रेष्ठ एवं सार्थक है।
- स्वच्छता में ही ईश्वर के दर्शन होते हैं, स्वच्छता सभी के लिए अनिवार्य है।
- अपना सर्वस्व समाजहित के लिए समर्पित करना ही मानव का कर्तव्य है।
- हृदय में प्राणी मात्र नारी एवं दीन दुखियों के लिए दर्द एवं प्रेम होना चाहिए।
- सदैव मानव को निराभिमान होना चाहिए।
- मानव को सदैव कर्तव्यों का पालन करना चाहिए यही सर्वश्रेष्ठ धर्म है।[4]

निष्कर्ष

पद्मश्री सुभाषिणी देवी के जीवन परिप्रेक्ष्य में सजीवता एवं सर्वस्व समर्पण भाव था, इसलिए वे समाजिक स्थिति का अनुभव करके शिक्षा–यज्ञ की आहुति में लगी रही। यथा संभव दीन–दुखियों की सेवा में तत्पर रही। वे गुरूकुल को चलाने के लिए हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब एवं दिल्ली आदि क्षेत्रों से अनुदान एकत्रित करती थी। साधनों के अभाव में पैदल यात्राएं करती हैं, जिससे उनका जीवन परिप्रेक्ष्य के प्रति दृष्टिकोण ही नव सृजन के रूप में मिलता है। उनका दृष्टिकोण काफी सकारात्मक एवं आग्रहपूर्ण था। वे आधुनिक भारत का निर्माण, भारतीयता से करना चाहती थी। उनके विचारों का आधार भारतीय मूल्य ही थे। सुभाषिणी का अध्ययन करने के पश्चात ही उनके जीवन परिप्रेक्ष्य से हम भारत की स्थिति में परिवर्तन ला सकते हैं। अतः सुभाषिणी ने एक प्रबल एवं सार्थक आदर्श भारतीयों के सम्मुख रखा है 'मानव उत्थान ही राष्ट्रोत्थान' इस महान कार्य में सभी एकजुट होकर जीवन परिप्रेक्ष्य की चेतना को जागृत करें। उन्होनें आदर्श जीवन शैली को प्रतिपादित किया। मानवतावादी एवं सार्वभौमिक मूल्यों को रेखांकित करते हुए उनका भारतीय जीवन परिप्रेक्ष्य के उदय में महत्वपूर्ण योगदान रहा।[5]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चन्द्र, विपिन. (2011). ***भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष,*** हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 54–55.
2. रानी, रविता. (2019). ***भक्त फूलसिंह एवं नारी गुरूकुल शिक्षा पद्धति : एक अध्ययन,*** शोध प्रबंध, एन.आई.आई.एल.एम., विश्वविद्यालय, कैथल, पृ. 128–138.
3. साक्षात्कार, सुश्री साहबकौर, सेवानिवृत्त प्राचार्या कन्या गुरूकुल व.मा.वि., बी.पी.एस.एम.वी. खानपुर कलां, सोनीपत तिथिः 21.10.2020'
4. साक्षात्कार, सुश्री ब्रह्मवती, संस्कृत प्राध्यापिका, क.गु.व.मा.वि., बी.पी.एस.एम.वी. खानपुर कलां, सोनीपत तिथि : 13.10.2020.
5. व्यक्तिगत सर्वेक्षण